www.thearyasamaj.org

RNI No. 26281/74 रजि. नं. पी.बी./जे.एल-011/2015-17

ओ३म्
कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब

साप्ताहिक

आर्य मर्यादा

आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब का प्रमुख साप्ताहिक पत्र

मूल्य : 2 रु.
वर्ष: 73 अंक : 42
सृष्टि संवत् 1960853117
15 जनवरी, 2017
दयानन्दाब्द 193
वार्षिक : 100 रू.
आजीवन : 1000 रू.
दूरभाष : 2292926, 5062726

जालन्धर

वर्ष-73, अंक : 42, 12-15 जनवरी 2017 तदनुसार 2 माघ सम्वत् 2073 मूल्य 2 रु० , वार्षिक 100 रु० आजीवन 1000 रु०

मनुष्य बन

-ले० स्वामी वेदानन्द (दयानन्द) तीर्थ

(गतांक से आगे)

मानव ! तू वायुयान में बैठकर आकाश की ओर उड़ जाता है, अन्तरिक्ष की सैर करता है। ज्ञात है यह कैसे सम्भव हो सका ? वेद के **'अन्तरिक्षे रजसो विमानः'** की बात नहीं कहूँगा और न ही कहूँगा रामायण के पुष्पक विमान की बात। आज के विमान का वर्णन सुनाऊँगा। किसी भद्र के चित्त में पक्षी को उड़ता देख उड़ने की समाई। उसने कृत्रिम पंख लगाकर उड़ने की ठानी। बेचारा गिर पड़ा। अगली पीढ़ी ने उसमें अपना मस्तिष्क लगाया। अब सोच मानव! यदि उस प्रथम त्यागी के ज्ञान को भुला दिया जाता तो नये सिरे से यत्न करना पड़ता, फल क्या होता ? वायुयान न बन पाता, अतः वेद का यह कहना **'ज्योतिष्मतः पथो रक्ष'** बहुत ही सारगर्भित है।

हाँ, यदि उस पहले उड़ने वाले ने जितना यत्न किया था उतने की ही रक्षा की जाती, उसमें अपना भाग न डाला जाता, अपना दिमाग़ न लड़ाया जाता, तो भी वायुयान न बन पाता, अतः वेद ने ठीक ही कहा-**'धिया कृतान्'**-प्रकाश की रक्षा अवश्य कर, किन्तु उसमें अपना भाग भी डाल, अन्यथा दीपक बुझ जाएगा।

वैदिकों ने इस तत्त्व को समझकर प्रथम संस्कृति=वेद तथा उसके अङ्गोपाङ्गों की रक्षा करने में प्राणपण से यत्न किया है, अतः वेद के शब्दों में कहा-**'नम ऋषिभ्यः पूर्वजेभ्यः।'**

ज्ञान का पर्यवसान कर्म में होता है। ज्ञान का अनुसरण करने के लिए ज्ञान के रक्षण और परिवर्धन की नितान्त आवश्यकता है, किन्तु ज्ञान का प्रयोजन ? 'ज्ञान ज्ञान के लिए' यह सिद्धान्त प्रमादियों का है। ज्ञान की सफलता कर्म में है। अतः वेद कहता है-

'अनुल्बणं वयत जोगुवामपः' = ज्ञानानुसार कर्म करने वालों के उलझनरहित कर्मों को करो।

लोकोक्ति है-**'लोकोऽयं कर्मबन्धनः'** कर्म बन्धन का कारण है। वेद कहता है कर्म तो अनिवार्य हैं, उनसे छूट नहीं सकते हो अतः ऐसे कर्म करो जो उलझन को मिटाने वाले हों, न कि उलझन को बढ़ाने वाले। जो कर्म ज्ञानविरहित होंगे, ज्ञान के विपरीत होंगे, वे अवश्य उलझन पैदा करेंगे, अतः ऐसा न कर जिससे संसार की उलझनें और बढ़ें। तू तो पहले ही बहुत उलझा हुआ है। तुझे सूझता नहीं कि कौन-सा अनुल्बण है और कौन-सा उल्बण ? तुझे कोई अंगुलि पकड़कर बताये। अच्छा, जहाँ तू रहता है, वहाँ कोई ब्रह्मनिष्ठ भी है या नहीं ? उन ब्रह्मनिष्ठों का व्यवहार देखना, जो सत्यप्रिय, मधुरभाषी, निष्काम, सर्वहितकारी हों। देख वे कैसे रहते हैं ? उनका अनुसरण कर, किन्तु ज्ञान को हाथ से न जाने देना, इन साधनों के अनुष्ठान से निःसन्देह मनुष्यता सुलभ हो जाती है, किन्तु, मनुष्यत्व के साथ वेद ने कर्त्तव्य भी लगा दिया है-

जनया दैव्यं जनम् = दैव्य जन पैदा कर।

मनुष्य को मनुष्यता की सारी सामग्री समाज से मिलती है, अतः उसे चाहिए कि वह भी समाज को कुछ दे जाए। समाज का सारा कार्यभार देवों के सहारे चलता है। प्रत्येक मनुष्य का कर्त्तव्य है कि ऐसे सर्वहितकारी देवों का कुछ-न-कुछ प्रत्युपकार अवश्य करे। इस भाव को लेकर वेद ने कहा-

जनया दैव्यं जनम्-

दैव्य=देवहितकारी जन को कौन पैदा करेगा ? क्या राक्षस, दस्यु ? कभी नहीं, अतः देवजन हितकारी सन्तान उत्पन्न करने के लिए मनुष्य को स्वयं देव बनना पड़ेगा, अर्थात् मनुष्य बनकर जब सन्तान उत्पन्न करने में प्रवृत्त होने लगे, तब उसके हृदय में कुकाम की कुवासना न हो, वरन् जन-समाज, नहीं-नहीं, देवसमाज के हित की भावना हो।

वेद मनुष्य बनाकर चुपके से देवत्व के मार्ग पर ला खड़ा करता है। यह विशेष मनन करने की बात है।

(स्वाध्याय संदोह से साभार)

वर्ष 2017 के नए कैलेण्डर मंगवाए

आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब, चौक किशनपुरा जालन्धर द्वारा प्रति वर्ष हजारों की संख्या में नव वर्ष के कैलेण्डर महर्षि दयानन्द के चित्र के साथ देसी तिथियों सहित छपवाए जाते हैं। गत कई वर्षों से आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब वैदिक साहित्य आधे मूल्य पर आर्य जनता को उपलब्ध करवा रही है। इसी प्रकार सन् 2017के महर्षि दयानन्द सरस्वती के चित्र वाले कैलेण्डर भी आधे मूल्य पर आर्य जनता को दिए जाएंगे। पिछले वर्ष की भान्ति इस वर्ष भी कैलेण्डर का मूल्य चार रुपये प्रति तथा 400 रुपए सैकड़ा रखा गया है। इसलिये सभी आर्य समाजें, शिक्षण संस्थाएं व आर्य बन्धु शीघ्र अति शीघ्र कैलेण्डर सभा कार्यालय से मंगवा कर अपने सदस्यों व इष्ट मित्रों में वितरित करें। कार्यालय का समय प्रातः 10.00 बजे से सायं 5 बजे तक है। रविवार को अवकाश रहता है इसलिये समय पर अपना व्यक्ति भेज कर कैलेण्डर मंगवाएं।

-प्रेम भारद्वाज सभा महामंत्री

www.thearyasamaj.org

'ईश्वर के मुख्य गुण, कर्म व स्वभाव'

-ले० मनमोहन कुमार आर्य, पताः 196 चुक्खूवाला-2 देहरादून-248001

महर्षि दयानन्द सरस्वती (1825-1883) ने अपने सत्यार्थ प्रकाश आदि ग्रन्थों में ईश्वर के स्वरूप पर व्यापक रूप से प्रकाश डाला है। इसके आधार पर हम ईश्वर के गुण, कर्म व स्वभाव को भी जान सकते हैं। यह हम सभी का आवश्यक कर्तव्य भी है, इसलिए कि जिस ईश्वर ने हमारे लिए इस सृष्टि को बनाया और जो हमारा माता, पिता व आचार्यवत् पालन कर रहा है, हम उसका उपकार माने और उसका उचित रीति से धन्यवाद व आभार व्यक्त करें। अत: ईश्वर को जानना हमारे सबके लिए आवश्यक है। ईश्वर के गुण, कर्म व स्वभाव को जान लेने पर संसार के सम्बन्ध में काफी कुछ जान लिया जाता है। ईश्वर के गुणों की चर्चा करें तो ईश्वर जड़ पदार्थ न होकर वह एक सच्चिदानन्दस्वरूप गुणों वाली सत्ता है। इसका अर्थ यह है कि ईश्वर की सत्ता है, वह चेतन पदार्थ है तथा वह सदा सर्वदा सब दिन व काल में आनन्द में अवस्थित रहता है। उसे कदापि दु:ख व अवसाद आदि नहीं होता जैसा कि जीवात्माओं व मनुष्यों को होता है। चेतन का अर्थ है कि ज्ञानयुक्त वा संवेदनशील सत्ता। प्रकृति व सृष्टि जड़ होने के कारण इसमें ज्ञान का सर्वथा अभाव होता है।

ईश्वर निराकार भी है। निराकार का अर्थ होता है कि जिसका आकार न हो। हमारे शरीर का एक आकार है जिसका कैमरे से चित्र बनाया जा सकता है। आकार को आकृति कह सकते हैं। हमारे शरीर की तो आकृति है परन्तु शरीर में स्थित जो जीवात्मा है उसका आकार स्पष्ट नहीं होता। वह एक बहुत सूक्ष्म बिन्दुवत है जो सत, रज व तम गुणों वाली परमाणु रूप प्रकृति से भी सूक्ष्म है। अत: जीवात्मा का निश्चित आकार व आकृति नहीं है परन्तु एक देशीय सत्ता होने के कारण हमारे कुछ विद्वान जीवात्मा का आकार मानते हैं तथा कुछ नहीं भी मानते। इसका अर्थ यही है कि जीवात्मा एक एकदेशीय, ससीम व अति सूक्ष्म सत्ता है जिसके आकार का वर्णन नहीं किया जा सकता। अत: जीवात्मा निराकार के समान ही है परन्तु एक देशीय होने के कारण उसका आकार एक सूक्ष्म बिन्दु व ऐसा कुछ हो सकता है व है, इसलिए कुछ विद्वान जीवात्मा को साकार भी मान लेते हैं। ईश्वर निराकार है, इसका अर्थ है कि उसका कोई आकार व आकृति नहीं है। निराकार का एक कारण उसका सर्वव्यापक व अनन्त होना भी है। ईश्वर इस समस्त चराचर जगत व ब्रह्माण्ड में सर्वान्तर्यामी स्वरूप से व्यापक है। उसकी लम्बाई व चौड़ाई अनन्त होने व उसके मनुष्य के समान आंख, नाक, कान, मुख व शरीर न होने के कारण वह अस्तित्ववान् होकर भी आकार से रहित अर्थात् निराकार है। ईश्वर का एक गुण सर्वज्ञ होना भी है। सर्वज्ञ का अर्थ है कि वह अपने, जीवात्मा और सृष्टि के विषय में भूत व वर्तमान का सब कुछ जानता है और उसे भविष्य में कब क्या करना है वह भी जानता है। वैदिक सिद्धान्त है कि ईश्वर त्रिकालदर्शी है जिसका अर्थ है कि ईश्वर जीवों के कर्म आदि व्यवहारों की अपेक्षा से भूत, भविष्य व वर्तमान आदि को जानता है। ईश्वर में ऐसे असंख्य व अनन्त गुण हैं जिसे वेदाध्ययन व सत्यार्थप्रकाश आदि ग्रन्थों का अध्ययन कर जाना जा सकता है।

ईश्वर के कर्मों की चर्चा करने पर हम पाते हैं कि उसने सत्, रज व तम गुणों वाली अत्यन्त सूक्ष्म त्रिगुणात्मक प्रकृति से इस समस्त दृश्यमान जगत सूर्य, चन्द्र, पृथिवी, मनुष्यादि प्राणियों की रचना की है और वही इसकी व्यवस्था, संचालन व पालन कर रहा है। यह सभी कार्य ईश्वर के कर्म व कर्त्तव्यों में आते हैं। ईश्वर का दूसरा मुख्य कर्म व कर्तव्य अनन्त जीवों को उनके पूर्वजन्म व कल्प आदि के शुभ व अशुभ कर्मों का न्यायोचित फल अर्थात् सुख व दु:ख देना है। जीवों को उनके कर्मानुसार सुख व दु:ख रूपी फल सहित उनके श्रेष्ठ कर्मों के अनुसार मोक्ष प्रदान करने के लिए ही ईश्वर ने सृष्टि की रचना की है। इससे यह ज्ञात होता है कि मनुष्यों सहित इतर समस्त योनियों में जीवात्माओं के जन्म व मृत्यु आदि की व्यवस्था ईश्वर करता है। ईश्वर सभी जीवों की जीवात्माओं में शुभ कर्म करने की प्रेरणा भी करता है। मनुष्य जब कोई अच्छा काम करता है तो उसे प्रसन्नता होती है और जब बुरा चोरी आदि काम करता है तो भय, शंका व लज्जा आदि अनुभव होती है, यह अनुभूतियां व प्रेरणायें ईश्वर की ओर से ही होती है जिसका उद्देश्य सद्कर्मों को करवाना व अशुभ कर्मों से छुड़ाना है। यह सभी ईश्वर द्वारा किये जाने वाले कर्म हैं। ईश्वर ने इस सृष्टि व ब्रह्माण्ड को धारण किया हुआ है तथा सृष्टि की आयु 4.32 अरब वर्ष होने पर वह इसकी प्रलय करता है। यह सब ईश्वर के मुख्य कर्म कहे जाते हैं। ईश्वर सर्वशक्तिमान है और इस कारण वह अपने किये जाने वाले सभी कार्यों को अकेला ही करता है। उसे अपने कार्यों में किसी अन्य सहायक अर्थात् विशेष पुत्र व सन्देशवाहक की आवश्यकता नहीं होती। ईश्वर के कुछ कर्मों को जानने के बाद अब हम ईश्वर के स्वभाव के विषय में विचार करते हैं। ईश्वर का स्वभाव न्यायकारी, दयालु व सभी जीवों को सुख प्रदान करना है। अपने इसी स्वभाव के कारण वह जीवों के लिए सृष्टि की रचना कर उन्हें उनके कर्मानुसार नाना योनियों में जन्म देता है। दुष्टों को वह रूलाने वाला है। जो मनुष्य दुष्ट स्वभाव व प्रकृति के होते हैं, ईश्वर उनको भय, शंका व लज्जा के रूप में व जन्म-जन्मान्तर में उनके कर्मों के अनुसार दु:ख रूपी फल देकर रूलाता है। अच्छे व शुभ कर्म करने वालों को सुख देकर भी वह उन्हें आनन्दित करता है। यह उसका स्वभाव है। वह सभी जीवों के साथ न्याय करता है। उसके न्याय के डर से ही लोग पाप के मार्ग को छोड़कर धर्म व पुण्य कर्मों को करते हैं। हमें लगता है कि जो लोग अनावश्यक हिंसा, मांसाहार, मदिरापान, भ्रष्टाचार व कालेधन का संग्रह आदि करते हैं वह घोरतम अविद्या से ग्रस्त हैं। उनकी आत्मायें मलों से आवृत अर्थात् ढकी हुई हैं। जैसे दर्पण पर धूल जम जाये तो उसमें आकृति दिखाई नहीं देती, इसी प्रकार दुष्ट आत्मायें होती हैं जिन पर काम, क्रोध, लोभ, मोह, अशुभ इच्छा, द्वेष रूपी अविद्या का गहरा आवरण उनकी आत्माओं को ढक लेता है और आत्मा ईश्वर से मिलने वाली प्रेरणाओं को या तो सुनता ही नहीं या उन्हें अनसुना कर देता है। इससे आत्मा का घोर पतन होने के साथ उसका भविष्य व परजन्म दु:खों के भोगने का आधार बनता है। विवेकी व विद्वान इन सब बातों को जानकर ही असत्य को छोड़ सत्य मार्ग पर चलते हुए ईश्वर की स्तुति, प्रार्थना व उपासना का मार्ग वरण करते हैं और योगाभ्यास आदि करके समाधि को सिद्ध कर ईश्वर साक्षात्कार कर विवेक को प्राप्त होकर जन्म व मरण के चक्र व बन्धनों से मुक्त हो जाते हैं। जीवों को आनन्दमय मोक्ष की प्राप्ति के लिए ही ईश्वर ने इस सृष्टि को रचा है जिसमें ऋषि दयानन्द, लेखराम, गुरुदत्त, श्रद्धानन्द व दर्शनानन्द जी जैसी आत्मायें मुमुक्षु बन कर कल्याण को प्राप्त होती है।

हम आशा करते हैं कि पाठक इस लेख द्वारा ईश्वर के गुण, कर्म व स्वभाव को कुछ जान सकेंगे। इसी के साथ लेख को विराम देते हैं।

ओ३म् शम्।

www.thearyasamaj.org

सम्पादकीय......

लोहड़ी एवं मकर संक्रान्ति का पर्व

वैदिक संस्कृति का शाश्वत संदेश है- तमसो मा ज्योतिर्गमय अर्थात् हम अन्धकार से प्रकाश की ओर बढ़ें। वैदिक संस्कृति या भारतीय संस्कृति प्रकाश की उपासक है। भारतीय संस्कृति का प्रत्येक पर्व हमें जीवन में आगे बढ़ने की प्रेरणा देता है। पर्व हमारी भारतीय संस्कृति के अभिन्न अंग हैं। पर्वों के बिना जीवन नीरस और फीका बन जाता है। पर्वों से व्यक्ति का जीवन उत्साहमय बन जाता है। भारतीय संस्कृति में समय-समय पर पर्वों का आयोजन किया जाता है। ये पर्व हमें ऋतु परिवर्तन के साथ-साथ जीवन में आगे बढ़ने की प्रेरणा देते हैं। भारतीय संस्कृति के अनुसार मनाए जाने वाले पर्वों द्वारा कोई न कोई दिव्य संदेश मिलता है। पर्व हमें पूर्ण करते हैं, आनन्दित करते है और उत्साह एवं उमंग के साथ जीवन जीने की प्रेरणा देते हैं। लोहड़ी एवं मकर संक्रान्ति के त्यौहार भी भारतीय संस्कृति के अभिन्न अंग हैं। सम्पूर्ण उत्तर भारत में इन त्यौहारों को अपने-अपने ढंग से मनाया जाता है। मकर संक्रान्ति से एक दिन पहले लोहड़ी का त्यौहार पंजाब प्रान्त में बहुत धूमधाम से मनाया जाता है। इस पर्व पर लोगों में बहुत आनन्द और उत्साह होता है। मकर संक्रान्ति का पर्व ऐतिहासिक पर्व है। सूर्य के दक्षिणायन से उत्तरायण में गमन का प्रतीक है। छ: मास तक सूर्य क्रान्तिवृत्त से उत्तर की ओर उदय होता रहा है। छ: मास तक दक्षिण की ओर निकलता रहता है। प्रत्येक षण्मास की अवधि का नाम अयन है। सूर्य के उत्तर की ओर उदय की अवधि को उत्तरायण और दक्षिण की ओर उदय की अवधि को दक्षिणायन कहा जाता है। उत्तरायण काल में सूर्य उत्तर की ओर से उदय होता हुआ दिखाई देता है और उसमें दिन बढ़ता जाता है और रात्रि घटती जाती है। दक्षिणायन में सूर्योदय दक्षिण की ओर दृष्टिगोचर होता है और उसमें दिन घटता जाता है और रात्रि बढ़ती जाती है। सूर्य की मकर राशि की संक्रान्ति से उत्तरायण और कर्क संक्रान्ति से दक्षिणायन प्रारम्भ होता है। सूर्य के प्रकाशाधिक्य के कारण उत्तरायण विशेष महत्त्वशाली माना जाता है। अतएव उत्तरायण के आरम्भ दिवस मकर संक्रान्ति को भी अधिक महत्त्व दिया जाता है।

वैदिक संस्कृति आशावादी है। मकर संक्रान्ति के अवसर पर शीत अपने यौवन पर होता है। जनावास, जंगल, वन, पर्वत सर्वत्र शीत का आतंक दिखाई देता है। चराचर जगत शीतराज का लोहा मान रहा है। हाथ पैर जाड़े से सिकुड़ जाते हैं- रात्रौ जानू दिवा भानु: रात्रि में जंघा और दिन में सूर्य किसी कवि की यह उक्ति इस अवसर पर पूर्णरूप से चरितार्थ होती है। दिन की अब तक यह अवस्था होती है कि सूर्य देव उदय होते ही अस्ताचल की ओर जाने की तैयारियां शुरू कर देते हैं। मानो दिन रात्रि में ही लीन होता जाता है। रात्रि सुरसा राक्षसी के समान अपनी देह बढ़ाती ही चली जाती है। अन्त को उसका भी अन्त आया। आज मकर संक्रान्ति के मकर ने उसको निगलना आरम्भ कर दिया। आज सूर्यदेव ने उत्तरायण में प्रवेश किया। अब दिन लम्बा होने लगेगा, उष्मा युक्त हो जाएगा। यह प्राकृतिक परिवर्तन हमें जीवन में आशावाद का पाठ पढ़ाता है। हमारे सोए हुए आत्मविश्वास को बढ़ाता है और कहता है कि यदि हमारे जीवन में कुछ शिथिलता, निरुत्साह आदि दोष भी आ गए हैं, हमारी दीन-हीन अवस्था है तो वह सदैव रहने वाली नहीं है, उसका भी अन्त सुनिश्चित है। इस काल की महिमा संस्कृत साहित्य में वेद से लेकर आधुनिक ग्रन्थपर्यन्त सविशेष वर्णन की गई है। वैदिक ग्रन्थों में उसको देवयान कहा गया है और ज्ञानी लोग स्वशरीर त्याग तक की अभिलाषा इसी उत्तरायण में रखते हैं। उनके विचारानुसार इस समय देह त्यागने से उनकी आत्मा सूर्य लोक में होकर प्रकाशमार्ग से प्रयाण करेगी। आजीवन ब्रह्मचारी भीष्म पितामह ने इसी उत्तरायण के आगमन तक शर-शय्या पर शयन करते हुए प्राणोत्सर्ग की प्रतीक्षा की थी। ऐसा प्रशस्त समय कोई पर्व बनने से कैसे वंचित रह सकता था।

पंजाब में मकर संक्रान्ति के पहले दिन लोहड़ी का त्यौहार मनाने की रीति है। इस अवसर पर स्थान-स्थान पर होली के समान अग्नियां प्रज्वलित की जाती हैं। उससे अगले दिन वहाँ मकर संक्रान्ति का भी उत्सव होता है, जिसको माघी कहा जाता है। यह भारत के सभी प्रान्तों में प्रचलित है। सभी प्रान्तों में इसके मनाए जाने की परिपाटी भी समान पाई जाती है। वैद्यक शास्त्र में शीत के प्रतिकार तिल, तेल, तूल(रूई) बतलाए गए हैं। जिस में तिल सबसे प्रमुख हैं। मकर संक्रान्ति के दिन भारत के सभी प्रान्तों में तिल और गुड़ या खांड के लड्डू बना कर जिनको तिलवे कहते हैं, दान किए जाते हैं और इष्ट मित्रों में बाँटे जाते हैं। मकर संक्रान्ति के पर्व पर दीनों को शीत निवारणार्थ कम्बल और घृतदान करने की प्रथा भी दिखाई देती है।

पर्व हमारी सभ्यता और संस्कृति के प्रतीक होते हैं। आर्यों के पर्वों पर यज्ञ, अध्ययन और दान का विशेष रूप से सम्पादन किया जाता है, जो आर्य जनता के हृदय को आनन्द से पूरित कर देता है। यही आर्यों के पर्वों की पर्वता है। पर्व के दिन दिन-प्रतिदिन के व्यवसायों की दौड़ धूप से अवकाश पाकर आर्य गृहों में विशेषता से आनन्दपूर्वक यज्ञ, अध्ययन और दान का अनुष्ठान किया जाता है। समस्त संसार के विद्वान् इस बात को स्वीकार करते हैं कि किसी जाति के पर्व उस जाति के जीवन हैं, अथवा दूसरे शब्दों में किसी जाति का अस्तित्व, उन्नति और अवनति उस के पर्वों के प्रकार से ही प्रकट होती है। जो जाति अपने पर्वों को उनके यथार्थ स्वरूप का ज्ञान रखकर समुचित श्रद्धापूर्ण प्रेम और असीम उत्साह से मनाती है। उसी जाति को वस्तुत: उन्नत और उत्कृष्ट कहा जा सकता है।

मकर संक्रान्ति का पर्व अन्धकार से प्रकाश की ओर जाने का पर्व है। जिस प्रकार सूर्य उत्तरायण में प्रवेश करके दिन-प्रतिदिन बढ़ता है, उसी प्रकार हम भी अपने गुणों में निरन्तर वृद्धि को प्राप्त करते हुए निरन्तर उन्नति को प्राप्त करें। सक्रान्ति का अर्थ है, सम्यक् क्रान्ति, सम्यक् परिवर्तन्। इसलिए हम अपने अन्दर की शिथिलता और मानसिक दुर्बलता को दूर करते हुए उत्साह एवं आनन्द की भावना को पैदा करें। इसीलिए आज आवश्यकता इस बात की है कि पर्वों के शुद्ध स्वरूप को समझ कर उस भावना को अपने जीवन में अपनाएं।

-प्रेम भारद्वाज संपादक एवं सभा महामन्त्री

श्रद्धानन्द बलिदान दिवस समारोह

आर्य समाज मन्दिर, फरीदकोट (पंजाब) में स्वामी श्रद्धानन्द बलिदान दिवस समारोह उत्साहपूर्वक मनाया गया। आर्य समाज के सुयोग्य पुरोहित पं० कमलेश कुमार शास्त्री जी के ब्रह्मत्व एवं निर्देशन में यह कार्यक्रम किया गया। जिसमें फिरोजपुर से पं० विजय आनन्द जी को भजनोपदेश के लिए बुलाया गया, पं० जी ने बहुत सुमुधुर संगीत के माध्यम से सुन्दर भजन व उपदेश किया जिसे सारी संगत निहाल हो गई। पं० विजय आनन्द जी ने बताया कि हम अपने दुर्गुणों को त्याग कर महान बन सकते हैं जैसे स्वामी श्रद्धानन्द ने अपने जीवन को महान बनाया। स्वामी हर किसी से प्रेम करते थे। शुद्धि का कार्य चलाकर स्वामी जी ने इस मनुष्य जाति पर उपकार किया। उनका कातिल जब उनके पास आया और उसने पानी मांगा तब स्वामी जी ने अपने सेवक धर्मपाल को पानी लाने भेजा तभी उस दुष्ट ने उन पर गोलियों से आक्रमण कर दिया। एक महान देश भक्त, समाज सुधारक का अन्त हो गया। ऐसे वीर पुरुषों को हमें याद करते रहना चाहिए। इस अवसर पर आर्य समाज के मन्त्री सतीश शर्मा जी, मदन मोहन देवगन जी, नरेश देवगन जी, प्रमोद कुमार गोयल, जगदीश लाल वर्मा, आशीष गोयल एवं स्त्री आर्य समाज के सभी सदस्यगण उपस्थित थे। इस बीच मोगा से श्री नरेन्द्र सूद जी एवं अन्य सदस्य भी उपस्थित हुए।

इस कार्यक्रम में प्रसाद व चाय की सेवा श्री आशी गोयल एवं समोसे की सेवा श्री सतीश शर्मा जी ने दी। यह कार्यक्रम बड़ा ही सराहनीय रहा। इसमें सभी मेम्बर सपरिवार उपस्थित हुए। अन्त में मन्त्री सतीश शर्मा जी ने सभी का धन्यवाद किया।

-मन्त्री सतीश कुमार शर्मा, आर्य समाज मन्दिर, फरीदकोट (पंजाब)

www.thearyasamaj.org

मानव जीवन में संस्कारों का महत्त्व

-ले० आचार्य रमेश "विद्यावाचस्पति" धर्माचार्य-डी. ए. वी. मॉडल स्कूल, सैक्टर-15ए, चण्डीगढ़

परमपिता परमेश्वर का बनाया गया संविधान वेद है, जो कि ऋक्, यजु:, साम और अथर्व के नाम से जाना जाता है। वेद में जहाँ प्राणिमात्र के कल्याणार्थ स्थान-स्थान पर परमेश्वर से कामना की गई है, वहीं मनुष्य मात्र के लिए "मनुर्भव" का उपदेश भी प्राप्त है। "मनुर्भव" का अर्थ है-हे मानव! तू मानव बन। है तो बड़ा आश्चर्य ! परन्तु जब वेद में ऐसा उपदेश है तो निश्चित रूप से यह उपदेश ग्रहणीय है। मनुर्भव की सार्थक कल्पना संस्कारों के बिना की नहीं जा सकती। वेद के जिस मंत्र भाग में "मनुर्भव" का उपदेश है, वही "जनया दैव्यं जनम्" का अर्थ है-दिव्यगुणों से युक्त संतति को जन्म दें। संतति को जन्म देने वाले माता-पिता हैं। यह माता-पिता के लिए उपदेश प्राप्त है। दिव्यगुणों से युक्त संतति का अभिप्राय है-संस्कारवान् संतति। वेद में वर्णित इस उपदेश में माता-पिता को सजग किया गया है कि जिस संतति को जन्म दें, वह संतति सुसंस्कारित हो और समय की माँग पर जहाँ वे संतति माता-पिता व अभिभावक जनों को सुख पहुँचा सकें वहीं वे परिवार, समाज व राष्ट्र के लिए भी समर्पित हो सकें। जी-हाँ, यह संभव है कदाचित् हमें संस्कारों के महत्त्व समझ में आ जाए। हमारे ऋषि मुनियों ने इस लक्ष्य की सम्पुष्टि में संस्कार-प्रणाली को जन्म दिया है। भारतीय व पाश्चात्य विद्वानों ने इस श्रृंखला में भिन्न-भिन्न तरीकों से अपने चिन्तन प्रस्तुत किए हैं तथा संस्कारों के सन्दर्भ में कई ग्रन्थ भी लिखें हैं। गुजरात की धरती टंकारा में जन्मे मूल शंकर, जो कि बाद में महर्षि दयानन्द के नाम से विख्यात् हुए और जिन्होंने आर्य समाज की स्थापना की, ने एक "संस्कार-विधि" ग्रन्थ की रचना की। सचमुच में यह ग्रन्थ संस्कारों की दृष्टि से अमूल्य निधि है। महर्षि दयानन्द अपने इस ग्रन्थ की भूमिका में मनुमहाराज का प्रमाण देते हुए लिखते हैं-

वैदिकै: कर्मभि: पुण्यैर्निषे-कादिर्द्विजन्मनाम्।
कार्य: शरीर संस्कार: पावन: प्रेत्य चेह च।।

अर्थात् द्विजों (ब्राह्मण, क्षत्रिय एवं वैश्य) का यह परम पुनीत कर्म है कि गर्भाधानादि से लेकर अन्त्येष्टिपर्यन्त सभी संस्कारों को वेदोक्त रीति से अवश्य करें। उपरोक्त श्लोक में "शरीर संस्कार:" और "प्रेत्य" ये दोनों शब्द अत्यन्त विचारणीय है। शरीर-संस्कार: और प्रेत्य का अर्थ है कि जहाँ स्थूल शरीर का संस्कार करणीय है, वहीं मरने के बाद मृतशरीर का भी संस्कार होना चाहिए। महर्षि दयानन्द जी ने अपने ग्रन्थ संस्कार-विधि में षोड्श (16) संस्कारों का नामोल्लेख किया है, जो इस प्रकार हैं-

1. गर्भाधान 2. पुंसवन 3. सीमन्तोन्नयन 4. जातकर्म 5. नामकरण 6. निष्क्रमण 7. अन्नप्राशन 8. चूड़ाकर्म 9. कर्णवेध 10. उपनयन (यज्ञोपवीत) 11. वेदारम्भ 12. समावर्त्तन 13. विवाह 14. वानप्रस्थ 15. संन्यास 16. अन्त्येष्टि।

पाठकवृन्दों से मेरा अत्यन्त आग्रह है कि उपरोक्त संस्कारों के नाम अवश्य कंठस्थ कर लें, तभी तो आप समय पर सभी संस्कारों को विधिवत् कर पायेंगे। महर्षि चरक संस्कार के सन्दर्भ में लिखते हैं-संस्कारो हि गुणान्तरम् आधानमुच्यते। अर्थात् संस्कार उसे कहते हैं, जिससे बुराईयों को दूर करें और सद्गुणों को धारण करें। वैदिक मनीषियों के अनुसार संस्कारों को करने के मुख्य तीन उद्देश्य हैं-

1. दोषों का अपनयन 2. सद्गुणों का विकास 3. हीनाङ् पूर्ति

वस्तुत: जब माता-पिता संतति के नवनिर्माण में व उनमें अच्छे गुणों को भरने हेतु पूर्व से सावधान रहेंगे तो निश्चितरूप उपरोक्त तीनों उद्देश्यों को पूर्ण करने में सफल हो पायेंगे। महर्षि दयानन्द ने अमर ग्रन्थ सत्यार्थ प्रकाश के दूसरे समुल्लास के प्रारम्भ में ही लिखा है-मातृमान् पितृमान् आचार्यवान् पुरुषो वेद।

यह शतपथ ब्राह्मण का वचन है। इसका अर्थ करते हुए महर्षि ने लिखा है कि वह संतति धन्य है, जिसके माता-पिता व आचार्य पठित व संस्कारित हों। एक संतति में अच्छे-अच्छे गुणों को डालने हेतु माता-पिता व उनके गुरुओं की अहम् भूमिका होती है। तदर्थ उपरोक्त तीनों को भी स्वयं संस्कारित होना चाहिए क्योंकि संतति सदैव अपने से बड़े जनों का अनुकरण करती हैं।

अब संस्कार के विशेष मर्म को समझिए। महर्षि दयानन्द जी सत्यार्थ प्रकाश के दूसरे समुल्लास में लिखते हैं कि जब माता-पिता अपने बच्चे को जन्म देना चाहें तो गर्भाधान से पूर्व, मध्य और पश्चात् में अर्थात् जब तक बच्चे का जन्म न हुआ हो विशेष सावधानी बर्ते अर्थात् मादकद्रव्य, बुद्धिनाशक पदार्थ और सिगरेटादि का सेवन न करें जिससे उनके रज-वीर्य अशुद्ध हो जाएं। क्योंकि रज-वीर्य के अशुद्ध होने से संतति में जहाँ दोष होते हैं, वहीं उनके अंगादि की भी ठीक तरह से पूर्ति नहीं हो पाती है। बल्कि गर्भाधान से पूर्व पति-पत्नी को ब्रह्मचर्य पूर्वक रहने का भी विधान है, ऐसा संस्कारों से सम्बन्धित ग्रन्थों में वर्णित है।

पाश्चात्य विद्वान् महात्मा सुकरात संस्कार के मर्म को भली-भाँति समझते थे। एक बार किसी सद्गृहस्थी ने उनसे पूछा-महात्मा जी! एक सुसंस्कारित संतति को जन्म देने के लिए उसकी तैयारी कब से प्रारंभ की जानी चाहिए? महात्मा जी ने कहा उसके जन्म के सौ वर्ष पूर्व से। यह उत्तर कितना आश्चर्य व प्रश्न से भरा है ! सामान्यजन उस तथ्य को नहीं समझ पायेंगे, जिनका कि सद्ग्रन्थों के स्वाध्यायादि से सम्बन्ध नहीं है। अत: पाठकवृन्दों से मेरा नम्र निवेदन है कि आगे के प्रसंग को समझने हेतु अपने विवेक को विशाल बनाने का प्रयास करेंगे। जब किसी बालक व बालिका का जन्म होता है तब वे अपने साथ दो प्रकार के संस्कार धारण किए हुए होते हैं-

1. पूर्व के जन्म-जन्मान्तरों के संस्कार

2. माता-पिता के संस्कार

कतिपय विद्वानों से यह भी सुनने को मिलता है कि जब बच्चे का जन्म होता है, तब वह एक खाली कागज की तरह होता है, उस पर जो चाहें लिख सकते हैं। परन्तु यह सिद्धान्त वैदिक नहीं हैं। क्योंकि वैदिक सिद्धान्त तो पूर्वजन्म को मानता है, तब बच्चे का जन्म होने पर वह एक खाली कागज की तरह कैसे हो सकता है, बल्कि उसके ऊपर तो पूर्व के जन्म-जन्मान्तरों के संस्कार पड़े हुए होंगे। हाँ वे पूर्व के संस्कार बुरे भी हो सकते हैं और अच्छे भी हो सकते हैं। ठीक इसी प्रकार माता-पिता के संस्कार के सन्दर्भ में भी कहा जायेगा कि जो उनके भी संस्कार रज-वीर्य के माध्यम से जो गर्भाधान से लेकर सीमन्तोन्नयन तक के संस्कारों में बच्चे को जो संस्कार प्राप्त हुए हैं, वही संस्कार बच्चे के जन्म के साथ विद्यमान होते हैं। उपरोक्त के दोनों ही संस्कार अच्छे व बुरे दोनों रूपों में हो सकते हैं।

तब माता-पिता का परम कर्त्तव्य बन जाता है कि उपरोक्त के दोनों संस्कारों के दोषों के अपनयन तथा सद्गुणों के विकास में बच्चे के जन्म के बाद भी शेष संस्कारों को यथाकाल करते जायें। जैसे-जातकर्म, नामकरण, निष्क्रमण, उपनयनादि। इन संस्कारों को करवाने में किसी सुयोग्य आचार्य की शिक्षा, दीक्षा बच्चे को अवश्य मिलनी चाहिए। क्योंकि आचार्य जहाँ बच्चों को भौतिक (लौकिक) ज्ञान देते हैं वहीं उन्हें आध्यात्मिक ज्ञान भी देते हैं। आज का मानव केवल भौतिक उन्नति में ही अपनी जीवन की सार्थकता समझता है जो कि जीवन का एक पक्ष है, जबकि जीवन का दूसरा पक्ष है-

(शेष पृष्ठ 7 पर)

www.thearyasamaj.org

सत्य के उपासक : महर्षि दयानन्द सरस्वती

-ले० महात्मा चैतन्यमुनि महादेव, तहसील सुन्दरनगर, मण्डी (हि०प्र०)

आज हमारे समाज में धर्म के नाम पर अनेक प्रकार की भ्रान्तियां फैली हुई है। इसी कारण जो धर्म व्यक्तियों को आपस में मिलकर रहना सिखाता है वही धर्म आज टकराव और अलगाव का कारण बन गया है। इस कथित धर्म और मत एवं मजहब के कारण आज मानव ही मानव के खून तक का प्यासा बन गया है। जिससे भला इस प्रकार की भावना प्रश्रय पाती हो उसे हम धर्म की संज्ञा कैसे दे सकते हैं ? धर्म तो एक ऐसी सार्वभौमिक व्यवस्था है जिसके सही आचरण से किसी प्रकार का संघर्ष, बैर वैमनस्य नहीं बल्कि आपसी भाईचारा और सुख-शान्ति का सृजन किया जा सकता है। धर्म तो एक ऐसा तत्व है जो व्यक्ति के भीतरी मानवीय मूल्यों को न केवल स्थापना करता है बल्कि उसे और भी अधिक विशाल से विशालतर बनाता है। आज जो धर्म के नाम पर टकराव का वातावरण बना है यह वास्तव में धर्म है ही नहीं क्योंकि धर्म में किसी प्रकार के स्वार्थ और मार-काट को स्थान ही नहीं है। असल में धर्म के सही स्वरूप को भूलकर व्यक्ति जब धर्म को अपने नीहित स्वार्थों तक सीमित कर देता है तब इस प्रकार की अव्यवस्था और अलगाव पैदा होता है। व्यक्ति की अपनी न्यूनताओं के कारण जब धर्म पाखण्ड और आडम्बर का रूप ग्रहण कर लेता है तो ऐसी स्थिति होती है। ऐसी ही स्थितियों को बदलकर सत्य धर्म की स्थापना करने के लिए समय-समय पर इस धरती पर महापुरूष अवतरित होकर भटके हुए लोगों का मार्गदर्शन करते हैं। कुछ तथाकथित महापुरूष भी किसी न किसी स्वार्थ के वशीभूत होकर संसार का पूरी तरह से भला करने में सक्षम नहीं हो पाते हैं बल्कि या तो अपना एक अलग सम्प्रदाय पैदा कर देते हैं या फिर धर्म के सही स्वरूप को बिगाड़कर उसमें ही कुछ ऐसे तत्व मिला देते हैं जो आगे चलकर लोगों में झगड़े और अलगाव का कारण बनते हैं। धर्म के सही स्वरूप की स्थापना करने और मानवीय धर्म का मार्ग प्रशस्त करने के लिए महापुरूष का स्वयं सब प्रकार की एषणाओं से ऊपर उठना जरूरी है। ऐसा (नि: स्वार्थ) महापुरूष ही जगती का सही अर्थों में कल्याण कर सकने में समर्थ होता है। सत्य एक ऐसा तत्व है जिसके पक्ष में खड़ा होना सबसे प्रमुख है। यदि हम सही अर्थो में चिन्तन करें तो सत्य ही धर्म है। जहां कहीं भी हम असत्य से समझौता करने के लिए लालायित हो जाते हैं, समझिए वहीं हम अधर्म का पक्ष ले रहे हैं। सत्य की स्थापना और उसका कार्यान्वयन ही मानों धर्म का सबसे उत्तम रूप है। इस सत्य के पक्ष में भी कोई-कोई विरला ही व्यक्ति दृढ़ता के साथ खड़ा रह सकता है अन्यथा किसी न किसी प्रलोभन में आकर व्यक्ति अधर्म के पथ पर ही भटक जाता है। इसीलिए हम इतिहास में महर्षि दयानन्द सरस्वती जी को अलग ही पंक्ति में खड़ा पाते हैं। उन्होंने किसी भी परिस्थिति में सत्य से अलग होना स्वीकार नहीं किया भले ही इसका उन्हें बहुत बड़ा मूल्य चुकाना पड़ा हो। किसी ने ठीक ही कहा है कि महापुरूष वह है जो सत्य और न्याय के पथ का बड़े से बड़ा दु:ख आने पर भी त्याग नहीं करता है। चाहे लक्ष्मी आए या चली जाए, लम्बी आयु मिले या अभी मृत्यु का ग्रास क्यों न बन जाना पड़े, कोई स्तुति करे या निन्दा करे मगर महापुरूष न्याय के पथ से कभी विचलित नहीं होता है। महर्षि दयानन्द जी में हम यही विशेषता पाते हैं। इसीलिए योगीराज अरविन्द जी ने महर्षि जी के बारे में श्रद्धांजलि देते हुए कहा है कि 'यदि हम संसार के समस्त महापुरूषों को पर्वतों की चोटियां मान लें तो महर्षि दयानन्द जी को सबसे उची चोटी मानना होगा।'

जहां तक मैं समझता हूँ महर्षि दयानन्द सरस्वती जी एक मात्र ऐसे महापुरूष हुए हैं जिन्होंने समाज सुधार के क्षेत्र में ऐसे मील के पत्थर स्थापित किए हैं जिनके मार्गदर्शन में आज भी हम सब प्रकार के सुधारों की आधारशीलता रख सकते हैं। यह ठीक है कि आज भी महर्षि जी के सार्वभौमिक सत्यों का आकलन सही ढंग से नहीं हो पाया है मगर अन्तत: समूची मानवता उन शाश्वत सूत्रों पर चलकर ही सुख और शान्ति प्राप्त कर सकती है। उन्होंने विश्वबन्धुत्व की दिशा में भी महत्वपूर्ण नियम हमारे सामने रखे हैं। उन्होंने जो सत्य वेद से ढूंढ निकाले उनके विपरीत कभी कोई समझौता नहीं किया। वे महान सत्यवादी थे। उनका जीवन सत्य से आरंभ हुआ, सम्पूर्ण जीवन सत्य के पक्ष में संघर्ष करते रहे और सत्य के लिए ही उन्होंने अपने जीवन को बलिवेदी पर अर्पित कर दिया। सत्यता के प्रति वे इतने जागरूक थे कि उन्होंने किसी प्रलोभन को सत्य से ऊपर नहीं होने दिया। असंख्य जीवन में प्रलोभन भी आए, अनेक प्रकार के असह्य दु:ख भी आए और उन्हें मारने तक के प्रयास किए गए मगर उन्होंने वेद पथ से मुंह नहीं मोड़ा। इसके विपरीत उनका आदर्श वाक्य रहा-'सत्य को ग्रहण करने और असत्य को त्यागने में सर्वदा उद्यत रहना चाहिए।' यह बात पूर्णत: सत्य है कि अन्तत: सत्य की ही विजय होती है और व्यक्ति, समाज या देश सबकी उन्नति का आधार यह सत्य ही है। सत्यमेव जयते नानृतात-यह अमर वाक्य ही समाज सुधार का सबसे बड़ा गुरूमन्त्र है। असत्यवादी जहां अपना अहित करता है वहीं वह समाज और देश को भी रसातल में ले जाता है। आज तो समाज में सत्य भी अलग-अलग हो गए हैं मगर महर्षि जी के अनुसार सत्य कभी भी दो नहीं हो सकते हैं।

जब वे कार्यक्षेत्र में उतरे तो उस समय धर्म का सही स्वरूप लुप्तप्राय हो चुका था। चारों ओर पाखण्ड और आंडबर का बोलबाला था। पाखण्डी लोग आम जनता को दोनों हाथों से लूट रहे थे। जात-पात का कोढ़ समाज को बुरी तरह से झिंझोड़ रहा था। भाई-भाई के खून का प्यासा हो गया था। अपने-अपने मत और मजहब की काराओं में ग्रसित लोग सामूहिक मानवता से बहुत दूर भटक गए थे। देश इन्हीं कुछ भूलभूत कारणों से गुलामी की जंजीरों में जकड़ा हुआ था। महर्षि दयानन्द जी ने वेद के आधार पर देश और समाज के सामने उन्नति के नए आयाम स्थापित किए। उनके विचारों से समाज और देश के लोगों ने अंगड़ाई ली और उन्होंने अपने भीतर एक नई चेतनता का अनुभव किया। महर्षि दयानन्द जी ने बिना किसी लाग लपेट के आम जनता के सामने समस्त सत्यों को उजागर किया जिनके कारण क्रान्तिकारी परिवर्तन सब जगह दिखाई देने लगे। उन्होंने गहराई से पतन के कारणों को खोज निकाला और उनका समाधान भी जनता के सामने रखा। जात-पात, धर्म-अधर्म, सत्य-असत्य, प्रकृति, जीवात्मा और परमात्मा आदि का विवेचन वेद और विज्ञान के आधार पर प्रस्तुत किया। स्थान-स्थान पर प्रवचन दिए, शास्त्रार्थ किए और लेखन का कार्य किया। सत्य के उपासक ने अपने ग्रन्थ सत्यार्थ प्रकाश में सब विषयों की समालोचना निष्पक्ष भाव से प्रस्तुत की। सत्य के उपासक ने अपने ग्रन्थ का नाम भी 'सत्यार्थप्रकाश' ही रखा। उनके मन्तव्यों का पता हमें इस ग्रन्थ की भूमिका से ही चल जाता है जिसमें उन्होंने साफ शब्दों में कहा है कि उनका न तो किसी प्रकार के अलग मत-सम्प्रदाय चलाने की मंशा है और न ही किसी के मन को दु:खाने की, बल्कि उनका कहना है कि मैने वेद के आधार पर समस्त सत्यों को विवेकी लोगों के मनन और चिन्तन के लिए इस ग्रन्थ में लिख दिया है। उनका लक्ष्य सत्य और असत्य का विवेचन करना रहा है। वे किसी विशेष मत या मजहब के पक्षधर न होकर समूची मानवता के हितैषी थे। उन्होंने मानव मात्र की एक ही जाति मानी है, हां गुण दोषों के आधार पर उनमें विभिन्नता हो सकती है मगर उसके मानवीय प्रेम और सौहार्द को नहीं छोड़ना चाहिए।

(क्रमश:)

www.thearyasamaj.org

मित्र बनो

-ले० श्री नरेन्द्र आहूजा 'विवेक' 602 जी एच 53 सैक्टर 20 पंचकूला

हम सभी की जीवन में यह कामना रहती है कि सभी हमारे साथ मित्रतापूर्ण व्यवहार करें। हमारा कोई शत्रु न हो। कोई भी हमें काम, क्रोध, लोभ, ईर्ष्या, द्वेष, आक्रामक, हिंसक, दुष्ट, संदिग्ध, सशंकित, कुपित तथा भयावह दृष्टि से ना देखे। परन्तु यह कामना करते समय हम अक्सर यह भूल जाते हैं कि यह बात स्वयं हमारे उपर भी लागू होती है। जब हम चाहते हैं सभी प्राणी हमारे मित्र हों और उनकी नजरों में हमारे लिए करुणा, दया, मैत्री और प्रेम का भाव हो तो हमारा भी कर्तव्य बन जाता है कि हम भी सभी से वैसा ही मित्रतापूर्ण व्यवहार करें जैसा अपने जीवन में दूसरों से अपने लिए अपेक्षा करते हैं। महर्षि दयानन्द ने आर्योद्देश्यरत्नमाला में मनुष्य को परिभाषित करते हुए स्वआत्मवत व्यवहार को मनुष्य का आवश्यक गुण बतलाया है। अत: यह स्पष्ट हो जाता है कि यदि हम अपने जीवन में दूसरों से मित्रतापूर्ण व्यवहार की आशा करते हैं तो हमें भी दूसरों से वैसा ही व्यवहार करना चाहिए। वैसे भी सामान्य सा नियम है जैसा हम बोयेंगे वैसा ही काटेंगे। यदि मित्रता के बीज बोयेंगे तो मित्रता की फसल ही मिलेगी।

यजुर्वेद के 38वें अध्याय का 18वां मंत्र है **'मित्रस्य चक्षुषा समीक्षामहे'** अर्थात् हम सभी लोग परस्पर एक-दूसरे को मित्र की दृष्टि से सम्यक देखा करें। वेद का यह मंत्र मानव धर्म का मूलाधार कहा जा सकता है। प्यार देना और प्यार पाना हर प्राणी का कर्तव्य और अधिकार है। हमारा कोई भी अधिकार हमारे कर्तव्य से बड़ा नहीं हो सकता। कर्तव्य के निर्वहन के उपरांत ही हम अपने अधिकार के बारे में सोच सकते हैं। अपने कर्तव्य का निर्वहन किए बिना अधिकार मांगना सर्वथा अनुचित है। यहां स्पष्ट हो जाता है कि परस्पर कर्तव्य निर्वहन से हम एक-दूसरे के अधिकारों की रक्षा करते हैं। यदि हम अपने जीवन में दूसरों के साथ मित्रतापूर्ण व्यवहार करने के कर्तव्य का निर्वहन करते हैं तो दूसरों से उसी परस्पर व्यवहार मित्रधर्म निर्वहन की रक्षा स्वत: हो जाती है। सरल भाषा में कहें तो प्यार देने से ही प्यार मिलता है। यदि हम दूसरों से शत्रुतापूर्ण व्यवहार करेंगे तो उनसे मित्रतापूर्ण व्यवहार की अपेक्षा करना मूर्खता ही होगी।

इस मंत्र में दो शब्दों **'मित्र'** और **'समीक्षा'** को समझ लेना आवश्यक है। **'मित्र'** को परिभाषित करते हुए लिखा **"मेद्यति स्निह्यति स्निह्यते वा स: मित्र:"** अर्थात् जो सबसे स्नेह करने वाला और सबको प्रीति करने योग्य है उसका नाम मित्र है। इससे स्पष्ट हो जाता है कि परस्पर मित्रधर्म के निर्वहन के लिए वांछित पात्रता हमारे अंदर होनी नितांत आवश्यक है। इसके लिए हमें पहले अपना आत्मनिरीक्षण करना होगा और काम, क्रोध, लोभ, मोह, ईर्ष्या, द्वेष, संशय जैसी कलुषित भावनाओं को निकालकर करुणा, दया, मैत्री, प्रेम जैसी भद्र भावनाओं को ग्रहण करना होगा। ऐसा करके ही हम मित्र बनने की पात्रता को पा सकते हैं। मनुस्मृति में मित्र के लिए पांच आवश्यक गुण बताए गए हैं 1. धर्मज्ञता 2. कृतज्ञता 3. सेवा सहायता के लिए तत्परता 4. होठों पर मुस्कान, दृष्टि में प्यार, हृदय में सद्भावना 5. सभी से स्वआत्मवत व्यवहार करने वाला प्राणी ही मित्र बन या बना सकता है।

'समीक्षा' का अर्थ केवल सम्यक दृष्टि से देखना ही नहीं अपितु मीमांसा करना भी है। मित्र वह नहीं जो प्रत्येक गलत बात पर भी केवल तुष्टिकरण के लिए चापलूसी करता हुआ हां में हां मिलाता रहे अपितु मित्र वह है जो सच्चे मित्र धर्म का निर्वहन करते हुए गलत कार्य पर हाथ पकड़कर झिंझोड़ते हुए गलत मार्ग से बचा कर सही मार्ग पर ले आए। जिस प्रकार अच्छे साहित्य सृजन में एक समालोचक या समीक्षक की भूमिका होती है वैसी ही भूमिका मित्र की होनी चाहिए।

हम सभी को परस्पर मित्र की दृष्टि से देखें। मैं सभी का प्रिय बनूं, सभी मेरे मित्र बन जाएं यह तभी संभव है जब मैं स्वयं सभी प्राणियों को मित्र की दृष्टि से देखूं। इसके लिए हमें निम्नलिखित गुणों को अपनाना पड़ेगा।

1. सुनी सुनाई बातों को बिना समीक्षा विश्वास करके अकारण किसी के बारे में कोई गलत धारणा ना बनाएं।
2. मिलें या बिछुड़े लेकिन केवल मधुरता से। मित्रता के लिए मधुरता परम आवश्यक है।
3. दूसरों में वास्तविक रूचि लें और स्वयं को योग्य सेवा के लिए प्रस्तुत करने में संकोच न करें।
4. छोटे व बड़े प्रत्येक व्यक्ति को सम्मान दें जिसका वह हकदार हो।
5. जीवन में अच्छे श्रोता बनें। दूसरों के दु:ख दर्द सुनकर उसका समाधान करने का प्रयास करते हुए हम मित्रता को सुदृढ़ कर सकते हैं।
6. समय अनुकूल मर्यादित सलाह देते हुए सहायता और सेवा को तत्पर रहें।
7. मित्र के गुणों को देखें और उसके गुणों की चर्चा सार्वजनिक रूप से करें। यदि कोई कमी है तो केवल उसको ही बताएं क्योंकि सुधार केवल उसी ने करना है।
8. चाटुकारिता अतिरंजित व अतिश्योक्ति प्रशंसा से बचें।
9. जो व्यवहार हम स्वयं के लिए अपेक्षित नहीं करते वैसा व्यवहार हम दूसरों के प्रति न करें।

इन गुणों को अपनाकर हम सभी के प्रिय बनकर सभी से मित्रता की अपेक्षा कर सकते हैं।

स्वामी श्रद्धानन्द-बलिदान दिवस

आज दिनांक 25-12-2016 (रविवार) को आर्य समाज मन्दिर कमालपुर होशियारपुर में स्वामी श्रद्धानन्द बलिदान दिवस बड़ी ही श्रद्धा के साथ मनाया गया। उस अवसर पर एक विशेष हवन यज्ञ का आयोजन किया गया। जिसमें श्री बलराज वासदेव ने परिवार सहित सामूहिक रूप से हवन यज्ञ में भाग लिया और उनके सुपुत्र श्री अरविंद वासदेव (सपत्नी) और भतीजा श्री संजीव वासदेव (सपत्नी) ने यज्ञ पद को सुशोभित किया। नगर से पधारे आर्यजनों ने बढ़-चढ़ कर आहुतियां डालीं।

तत्पश्चात् 'दयानन्द हाल' में कार्यक्रम चला। मन्त्री प्रो० यश पाल वालिया ने स्वामी श्रद्धानन्द जी के जीवन से घटनाएं लेकर एक सजीव चित्र खींचा। उन्होंने स्वामी जी के जन्मस्थान जालन्धर के निकट ग्राम तलवन से लेकर काशी, लखनऊ और बरेली होते हुए लाहौर तक की जीवन यात्रा का उल्लेख किया। बरेली में महर्षि दयानन्द सरस्वती जी के सम्पर्क में आने से उनके जीवन ने पलटा खाया और फिर सत्यार्थ प्रकाश पढ़ जाने से कायाकल्प ही हो गया। राजनीति के क्षेत्र में स्वामी श्रद्धानन्द का महती योगदान रहा परन्तु अधिक देर तक टिक नहीं सके, कभी मालवीय जी के साथ और कभी उन से दूर और फिर गांधी जी से मतभेद। अमृतसर में भारतीय नैशनल कांग्रेस के अधिवेशन में स्वागती कक्ष की अध्यक्षता, दिल्ली में जामा मस्जिद के प्राचीर से ऋग्वेद के मन्त्र से भाषण का आरम्भ और मलकाना राजपूतों की घर वापसी सराहनीय कार्य रहे। अब वे मुन्शी राम से महात्मा मुन्शी राम बन चुके थे। हरिद्वार में गुरूकुल कांगड़ी की स्थापना उनके मन की बात थी और आज यह विश्व विद्यालय वट वृक्ष बन चुका है। दलित उद्धार, वैदिक वर्णाश्रम और हिन्दू मुस्लिम एकता उनका लक्ष्य रहा।

कुमारी सुकीर्ति ने एक लेख पढ़ कर स्वामी श्रद्धानन्द जी को नमन किया। श्रीमती बिमला भाटिया और श्रीमती संगीता शर्मा ने सुन्दर प्रभु भक्ति के गीत गाये। प्रि० के० सी० शर्मा ने स्वामी श्रद्धानन्द जी को एक प्रकाश स्तम्भ बताया जिसके आलोक में व्यक्ति अपने जीवन को सार्थक बना सकता है। उन्होंने आगे कहा कि आज के दिन विद्यार्थी स्वामी श्रद्धानन्द जी के जीवन से सीख ले सकते हैं। उनके हत्यारे धर्मान्ध अब्दुल रशीद का दुष्कृत्य विफल ही रहा। अंत में सभी उपस्थित आर्य जनों ने ऋषि लंगर का आनंद माना।

-बिमला भाटिया-उप प्रधाना

www.thearyasamaj.org

पृष्ठ 4 का शेष-मानव जीवन में संस्कारों का महत्त्व

पारलौकिक उन्नति। यह तो संस्कारों को करने से ही संभव है। वेदों में कहा गया है-

संस्कारहीना : न पुनन्ति वेदाः।

अर्थात् संस्कार विहीन होने पर वेद भी उसे पवित्र नहीं कर पाता है।

संस्कार का अभिप्राय है-जिसमें मनुष्य के एक इन्सान बनने में जिन-जिन मानवीय गुणों की आवश्यकता है, उन-उन, गुणों का समावेश होना। चोर, लंपट, दुर्व्यसनी, दुराचारी देशद्रोही-इन्हें एक संस्कारवान् नागरिक नहीं कहेंगे। सदाचारी, सत्यवादी, लोकोपकारी सद्व्यवहारी आदि को हम एक संस्कारवान् नागरिक कहते हैं।

आज के इस भौतिक प्रधान युग में बाह्य आभूषणों को धारण करना ही अपने आप को सौन्दर्य से भरा हुआ मानते हैं। परन्तु मनुमहाराज कहते हैं कि ये बाह्य आभूषण मनुष्य के लिए वास्तविक सौन्दर्य का प्रतीक नहीं है। बल्कि बाह्य आभूषणों से तो मनुष्य के देहाभिमान, विषयासक्ति, चोरादि का भय और यहाँ तक कि मृत्यु का भी भय बन जाता है। अत : ऐसे आभूषण विद्याग्रहण करने वालों के लिए मनुमहाराज ने त्याज्य बताया है और जिन-जिन गुणों से मनुष्य की सुन्दरता बढ़ सकती है, जो कि एक मानव का आन्तरिक आभूषण है, वे ग्रहण करने योग्य हैं। इस सन्दर्भ में मनुस्मृति में कहा गया है-

विद्याविलासमनसो धृतशील-शिक्षाः
सत्यव्रताः रहितमानमला-पहाराः।
संसार दुःखदलनेन विभूषिता ये,
धन्याः नराः विहितकर्मो-पकाराः।।

अर्थात् जो निरंतर अपना मन विद्या की प्राप्ति में, सद्व्यवहारों को करने में, सत्यभाषणादि में, मान-अपमान से परे होकर, संसार के दुःखी लोगों को सुख पहुँचाने में और जगत् उपकार में लगे हुए हैं, वे मनुष्य धन्य हैं। वस्तुतः एक मनुष्य की वास्तविक सुन्दरता इन्हीं गुणों के अपनाने में है। इन गुणों के अभाव में मनुष्य पशुतुल्य है। उपरोक्त सारे मानवीय सद्गुण संस्कार-जन्य ही तो हैं। संक्षेप में यह कहा जा सकता है कि वैदिक पद्धति में वर्णित षोड़श संस्कार व शिक्षा अत्यन्त ग्रहणीय हैं, क्योंकि ये संस्कार व शिक्षा मनुष्यों को विषयासक्ति से दूर होने व भय-रहित होकर सुखपूर्वक जीवन व्यतीत कर सके, ऐसा सन्मार्ग दिखाता है। परन्तु दुःख की बात यह है कि हम इन संस्कारों को लोक दिखावे अथवा किसी भय के कारण करते हैं। बच्चे के जन्म से पूर्व के तीन संस्कार तो लज्जा आदि के कारण किए ही नहीं जाते। समाज में मुख्य रूप से तीन संस्कार प्रसिद्ध हैं-

1. नामकरण 2. विवाह 3. अन्त्येष्टि

क्रमशः इन संस्कारों के प्रचलन में कहीं न कहीं लोक दिखावा और भय का होना ही प्रतीत होता है। नामकरण और विवाह लोक दिखावे के संस्कार बन गए तथा अन्त्येष्टि कर्म डर के कारण किए जाते हैं इसका मुख्य कारण है कि हम संस्कार के मर्म को नहीं समझ पा रहे हैं। संस्कारों की श्रृंखला में बारहवाँ संस्कार ''समावर्तन'' संस्कार है, जो विवाह के पूर्व माता-पिता के घर और आचार्य के कुल में किया जाता है। माता पिता व आचार्य अपने बच्चे को सम्पूर्ण शिक्षा देने के पश्चात् आशीर्वाद रूप में कहते हैं-ओं भूः त्वयि दधामि, ओं भुवः त्वयि दधामि, ओं स्वः त्वयि दधामि, ओं भूर्भुवः स्वः सर्व त्वयि दधामि।

अर्थात् यह धरती तुझे देता हूँ, यह अन्तरिक्ष तुझे देता हूँ, यह द्युलोक तुझे देता हूँ और अन्त में कहते है, यह संसार ही तुझे देता हूँ। यहाँ अपने बच्चों को धन-दौलत देने की बात नहीं कही गई है। माता-पिता व आचार्यों का यहाँ कहने का तात्पर्य यह है कि संतति (बच्चे) ने इतने अच्छे संस्कार प्राप्त किए हैं कि इस संसार में आनन्द-पूर्वक विचरण कर सकते हैं। तो ये हैं संस्कारों के महत्त्व। संक्षेप में मैं निवेदन करना चाहूँगा कि संस्कार के महत्व को समझें व इसे अपनाने के लिए स्वयं को दृढ़ संकल्प करें।

आर्य समाज रायकोट का चुनाव

आर्य समाज रायकोट का चुनाव लाला सोहन लाल जी की अध्यक्षता में दिनांक 2 जनवरी 2017 को सम्पन्न हुआ। इस अवसर पर निम्न अधिकारी निवार्चित हुए-: प्रधान श्री सतीश कुमार कौड़ा, कार्यकारी प्रधान श्री महन्त मुनीन्द्र दास, उपप्रधान श्री अशोक सच्चर, महामन्त्री श्री राजिन्द्र कुमार कौड़ा, मन्त्री श्री परमिन्द्र गोयल, कोषाध्यक्ष श्री अनिल सच्चर, वेद प्रचार अधिष्ठाता श्री प्रेमनाथ जिन्दल निर्वाचित हुए।

राजिन्द्र कौड़ा महामन्त्री आर्य समाज रायकोट

दुःखनिवारक पवित्र गायत्री महायज्ञ

स्त्री आर्य समाज मॉडल टॉऊन जालन्धर में दुःख निवारक सुखवर्षक पवित्र गायत्री महायज्ञ दिनांक 14 जनवरी 2017 शनिवार से 13 फरवरी 2017 दिन सोमवार तक लगातार एक मास अगाध श्रद्धा व उत्साहपूर्वक आयोजित किया जा रहा है जिसकी पूर्णाहुति 13 फरवरी 2017 को डाली जाएगी। इस अवसर पर 14 से 20 जनवरी तक आचार्य महावीर मुमुक्षु जी मुरादाबाद, 21 से 23 जनवरी तक आचार्य सुरेश शास्त्री जी जालन्धर, 24 से 27 जनवरी डा. शिवदत्त पाण्डे जी उत्तरप्रदेश, 28 जनवरी से 3 फरवरी तक आचार्य राजू वैज्ञानिक जी दिल्ली, 7 फरवरी से 13 फरवरी तक महात्मा चैतन्यमुनि जी सुन्दरनगर आमन्त्रित हैं। कार्यक्रम का समय 14 जनवरी से 12 फरवरी तक दोपहर 2:30 से 4:30 बजे तक रहेगा। विशेष पूर्णाहुति समारोह दिनांक 13 फरवरी 2017 सोमवार को होगा। यज्ञ प्रातः 11:00 से 12:00 बजे तक होगा। यज्ञ के ब्रह्मा पं. सत्यप्रकाश जी शास्त्री होंगे। 12:00 से 2:00 बजे तक भजन एवं प्रवचन होंगे। प्रीतिभोज दोपहर 2:00 बजे होगा। इस कार्यक्रम की अध्यक्षता श्रीमती गुलशन शर्मा जी एवं संयोजिका श्रीमती ज्योति शर्मा व श्रीमती नीरू शर्मा होंगी। मुख्यातिथि श्रीमती निधि कपूर जी होंगी। मुख्य वक्ता के रूप में महात्मा चैतन्यमुनि जी तथा वक्ता के रूप में स्वामी मधुरानन्दा जी व श्रीमती रेखा कालिया भारद्वाज जी आमन्त्रित हैं। इस अवसर पर भजन श्रीमती रश्मि घई जी व माता सत्याप्रिया यति जी के होंगे। इस कार्यक्रम में श्री सुदर्शन शर्मा जी प्रधान आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब, श्री प्रदीप आनन्द जी, श्री विनोद चुघ, श्री चन्द्रमोहन, श्री ध्रुव मित्तल जी को सम्मानित किया जाएगा। कार्यक्रम के अन्त में स्त्री आर्य समाज की यशस्वी प्रधाना श्रीमती सुशीला भगत जी द्वारा सभी आए हुए गणमान्य अतिथियों का धन्यवाद किया जाएगा। इस अवसर पर पुरूष भी सादर आमन्त्रित हैं। स्त्री आर्य समाज मॉडल टाऊन आर्य जगत् की एकमात्र ऐसी संस्था है जो सामूहिक सहयोग से ऋषि द्वारा निर्धारित लक्ष्यों की पूर्ति हेतु कृतसंकल्प है व निरन्तर प्रगति के पथ पर अग्रसर है। स्त्री आर्य समाज द्वारा गत 57 वर्षों से माघ मास में गायत्री महायज्ञ समारोह बड़ी श्रद्धा से मनाया जाता है।

रजनी सेठी व प्रोमिला अरोड़ा मन्त्राणी स्त्री आर्य समाज

दीपावली उत्सव मनाया गया

विगत दिनों आर्य समाज की विदुषी वक्ता श्रीमती सरला भारद्वाज को इग्लैंड प्रवास के दौरान आर्य समाज मण्डल द्वारा आयोजित दीपावली के समारोह में सम्मिलित होने का अवसर मिला। आर्य समाज के सदस्यों के उत्साह और उपस्थिति को देख कर लगता था कि विदेशों में रह रहे भारतीय अपनी सांस्कृतिक धरोहर बच्चों तक पहुंचाने के लिए हर सम्भव प्रयत्न कर रहे हैं। आर्य समाज मण्डल प्रतिमान पत्रिका प्रकाशित करता है। जिसमें उस गतिविधियों का विवरण होता है। सरला भारद्वाज ने जब सभा प्रधान को अपनी पुस्तक 'उपनिषद अन्न से आनन्द तक' भेंट की तो उन्होंने उन्हें उपनिषदों के सन्दर्भ में मानव मूल्यों पर सम्बोधन देने के लिए अनुरोध किया। डा. सरला भारद्वाज के सम्बोधन से सभी आर्य सदस्य प्रेरित और प्रभावित हुए।

-पं यज्ञ मित्र जी

श्री देशबन्धु चोपड़ा जी नहीं रहे

आर्य समाज बंगा रोड़ फगवाड़ा के मन्त्री तथा आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के आर्य वीर दल के अधिठाता श्री देशबन्धु चोपड़ा का निधन 28 दिसम्बर 2016 को निधन हो गया था। उनका अन्तिम संस्कार पूर्ण वैदिक रीति से किया गया। आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के कोषाध्यक्ष श्री सुधीर शर्मा जी एवं मन्त्री श्री रणजीत आर्य ने सभा की ओर से पुष्पचक्र अर्पित कर उन्हें अपनी श्रद्धांजलि दी। जालन्धर शहर के गणमान्य महानुभावों ने उनके पार्थिव शरीर अपने श्रद्धासुमन अर्पण किए। उनकी आत्मिक शान्ति के लिए अन्तिम शोक सभा का आयोजन दिनांक 30 दिसम्बर को आर्य समाज बंगा रोड़ फगवाड़ा में किया गया। श्री देशबन्धु जी चोपड़ा आर्य समाज के समर्पित कार्यकर्ता थे एवं आर्य विचारों से ओत-प्रोत थे। श्री चोपड़ा जी की यज्ञ के प्रति अगाध श्रद्धा थी तथा स्वाध्याय भी किया करते थे। श्री देशबन्धु चोपड़ा जी का स्वभाव बहुत विनम्र था। आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब में वेद प्रचार अधिष्ठाता, साहित्य विभाग अधिष्ठाता एवं आर्य वीर दल अधिष्ठाता के रूप में कार्य करते हुए उन्होंने अपना अमूल्य योगदान दिया। आर्य समाज बंगा रोड़ फगवाड़ा के कई वर्षों से मन्त्री पद पर रहकर सेवा करते हुए समाज की गतिविधियों को आगे बढ़ा रहे थे। आर्य समाज के प्रति समर्पण एवं उनके द्वारा दिए गए योगदान को भुलाया नहीं जा सकता।

श्री देशबन्धु चोपड़ा जी का अकस्मात् इस संसार से चले जाना आर्य समाज की अपूरणीय क्षति है। आर्य समाज ने एक समर्पित और कर्मठ कार्यकर्ता खो दिया। आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब आदरणीय श्री देशबन्धु चोपड़ा जी के निधन पर गहरा दु:ख व्यक्त करती है। मैं आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब, आर्य विद्या परिषद पंजाब एवं पंजाब की समस्त आर्य समाजों एवं शिक्षण संस्थाओं की तरफ से श्री देशबन्धु चोपड़ा जी को हार्दिक श्रद्धांजलि भेंट करता हूँ। परमपिता परमात्मा दिवंगत आत्मा को शान्ति एवं सद्गति प्रदान करे, अपने चरणों में स्थान दे एवं शोक संतप्त समस्त आर्य परिवार को धैर्य शक्ति प्रदान करें।

प्रेम भारद्वाज संपादक, आर्य मर्यादा एवं सभा महामन्त्री

श्रीमती कुलवन्ती गुप्ता नहीं रही

आर्य समाज जवाहर नगर के कोषाध्यक्ष श्री राजीव गुप्ता जी की पूज्या माता श्रीमती कुलवन्ती जी गुप्ता का 29 दिसम्बर को निधन हो गया। श्रीमती कुलवन्ती गुप्ता जी बहुत ही धार्मिक विचारों वाली महिला थी जिन्हें यज्ञ पर अगाध श्रद्धा और विश्वास था। वह प्रतिदिन श्रद्धा के साथ यज्ञ करती रही और जीवन भर वैदिक सिद्धान्तों पर अड़िग रहीं। उन्होंने आर्य समाज की तन-मन और धन से सेवा की। 31 दिसम्बर 2016 को श्री कृष्णा मन्दिर मॉडल टाऊन लुधियाना में उनकी अन्तिम प्रार्थना सभा हुई जिसमें लुधियाना की समस्त आर्य समाजों, संस्थाओं, पुरोहित सभा के साथ-साथ नगर के धार्मिक, सामाजिक एवं राजनीतिक संस्थाओं के गणमान्य सदस्यों ने वहां पहुंच कर माता जी को अपनी श्रद्धांजलि अर्पित की। पूर्ण वैदिक पद्धति के अनुसार सम्पूर्ण क्रियाएं सम्पन्न हुई।

विजय सरीन प्रधान आर्य समाज जवाहर नगर

योग-ध्यान, साधना शिविर

आनन्दधाम (गढ़ी आश्रम) उधमपुर, जन्मू में आश्रम के मुख्य संरक्षक एवं निदेशक पूज्य महात्मा चैतन्यमुनि जी की अध्यक्षता एवं पूज्य मां सत्यप्रियायतिजी के सान्निध्य में दिनांक 9 से 16 अप्रैल-2017 तक नि:शुल्क योग-ध्यान-साधना शिविर का आयोजन किया गया है। जिसमें अनुभवी आचार्यों एवं महात्माओं द्वारा उपासना, प्राणायाम, योगासन आदि कराए जाऐंगे तथा उपनिषद्-पठनपाठन की भी व्यवस्था है। शिविर में रोजड़, गुजरात से शिक्षित ब्र० सत्यप्रकाश नैष्ठिक जी, वैदिक प्रवक्ता श्री अखिलेश भारतीय जी आदि अन्य अनेक विद्वान् भी पधार रहे हैं। इस अवसर पर पूज्य महात्माजी के ब्रह्मत्व में प्रतिवर्ष की भान्ति सामवेद पारायण-यज्ञ का आयोजन भी किया गया है। शिविर में साधक अपनी शंकाओं का समाधान भी कर सकेंगे। आश्रम में पूज्य महात्माजी के सान्निध्य में पहले लगाए गए शिविरों में शिविरार्थियों के बहुत अच्छे अनुभव रहे हैं इसलिए साधकों की संख्या निरन्तर बढ़ती जा रही है। अत: इच्छुक साधक अपना स्थान आरक्षित करने के लिए फोन नं० 09419107788 व 09419198451 पर तुरन्त सम्पर्क करें।

-भारतभूषण आनन्द, आश्रम प्रधान।

गुरुकुल का आयुर्वेद महान
घर-घर में मिले रोगों से निदान

100 गुरुकुल शताब्दी

गुरुकुल च्यवनप्राश
सभी के लिए स्वादिष्ट, रुचिकर, पौष्टिक रसायन।

गुरुकुल मधु
गुणवत्ता एवं ताज़गी के लिए

गुरुकुल पायोकिल
पायोरिया की आयुर्वेदिक औषधि
दांतों में खून रोके, मुंह की दुर्गन्ध दूर करे, मसूड़ों के रोग, ढीले दांत ठीक करे।

गुरुकुल चाय
खाँसी, जुकाम, इन्फ्लूएंजा व थकान में अत्यंत उपयोगी।

गुरुकुल शतशिलाजीत सूर्यतापी
पुष्टीदायक, बलवर्धक
शरीर में नया खून और उत्साह का अनुभव

गुरुकुल ब्राह्मी रसायन
बुद्धिवर्धक, स्फूर्तिदायक, दिमागी कमजोरी दूर करे।

गुरुकुल मधुमेह नाशिनी गुटिका
मधुमेह एवं प्रत्येक प्रकार के प्रमेह में लाभदायक

अन्य प्रमुख उत्पाद
गुरुकुल द्राक्षारिष्ठ
गुरुकुल रक्तशोधक
गुरुकुल अश्वगंधारिष्ट

गुरुकुल कांगड़ी फार्मेसी, हरिद्वार डाकघर : गुरुकुल कांगड़ी-249404, ज़िला-हरिद्वार (उत्तरांचल) फोन : 0134-416073

शाखा कार्यालय : 63, गली राजा केदार नाथ, चावड़ी बाज़ार, दिल्ली-6, फोन : 23261871

श्री प्रेम भारद्वाज महामन्त्री, सम्पादक, प्रकाशक, मुद्रक द्वारा आर. के. प्रिंटर्स प्रैस, टाण्डा फाटक जालन्धर से मुद्रित होकर आर्य मर्यादा कार्यालय, गुरुदत्त भवन, चौक किशनपुरा, जालन्धर से इसकी स्वामिनी आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के लिए प्रकाशित हुआ। E-mail: apspunjab2010@gmail.com
आर्य मर्यादा में प्रकाशित सारी लेखन सामग्री से सम्पादक का सहमत होना आवश्यक नहीं। प्रत्येक विवाद के लिए न्याय क्षेत्र जालन्धर होगा।